ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

''मेरठ : एक ऐतिहासिक परिचय''

Dr. Krishna Kant Sharma

एसो० प्रोफेसर–इतिहास विभाग, एम०एम० कॉलेज, मोदीनगर

मेरठ का प्रारम्भिक नाम मयराष्ट्र मिलता हैं एक अनुश्रुति के अनुसारद दिति के पुत्र, हेमा के पति, मन्दोदरी के पिता और रावण के श्वसुर मय नामक दानव ने इस नगरी को बसाया था, इसलिए इसका नाम मयराष्ट्र पड़ा था। मय का उल्लेख बाल्मिकी रामायण में आया है। मयराष्ट्र ही समय के चलते मेरठ में परिवर्तित हो गया। मेरठ में वर्तमान में भी अनेक स्थल मन्दोदरी से जुड़े हैं जैसे स्थानीय मान्यता के अनुसार मन्दोदरी विल्व वृक्षों के वन में स्थित शिव–मन्दिर में पूजा–अर्चना करने जाती थी। यह मन्दिर आज भी मेरठ में सदर–थाने के समीप बिल्वेश्वर मन्दिर कें नाम से जाना जाता है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित है।

मेरठ प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता का एक महत्वपूर्ण स्थल रहा है। भारत की प्राचीनतम सभ्यता हड़प्पा सभ्यता का पूर्वी केन्द्र आलमगीरपुर मेरठ जनपद में हिण्डन नदी के किनारे स्थित है, जो इस बात का प्रमाण है कि मेरठ प्रारम्भ से ही मानव सभ्यता के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। इसके उपरान्त मेरठ वैदिक एवम् महाभारत काल का भी एक प्रमुख सांस्कृतिक एवम् राजनैतिक केन्द्र रहा है। कुरू जनपद की राजधानी हस्तिनापुर मेरठ जनपद के ही अन्तर्गत स्थित थी। 1950–51 ई० में प्रो० बी०बी० लाल के निर्देशन में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा हस्तिनापुर में उत्खन्न कराया गया था, जिसमें अनेक पुरातात्विक महत्व की वस्तुए प्राप्त हुई थी, जिसमें OCP, PGW, से लेकर मुगल–काल तक के अवशेष प्राप्त हुए थे। यह उत्खन्न यहां के पुरातात्विक व ऐतिहासिक महत्व को स्पष्ट करता है। अनेक साहित्यिक स्रोत भी मेरठ जनपद के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालते हैं, जैन साहित्य के अनुसार शान्तिनाथ, कुथनाथ, अरनाथ जो क्रमशः 16 वें, 17 वें, 18 वें, तीर्थकर रहे है, उनकी जन्म स्थली हस्तिनापुर थी। इसके अतिरिक्त प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव जी के उपवास का पारणा भी यही हुआ था। अतः यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। इसके क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि हड़प्पा काल से लेकर वर्तमान समय तक इस क्षेत्र में सभ्यताओं की निरन्तरता रही है।

प्राचीन भारत में राजनैतिक रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल अशोक का माना जाता है। उस समय सम्पूर्ण भारत वर्ष एक राजनैतिक ईकाई के रूप में परिलक्षित होता है। मेरठ अशोक महान के राज्य का एक महत्वपूर्ण शहर रहा है। इसी कारण अशोक ने अपना स्तम्भ लेख मेरठ शहर में लगवाया था। इस स्तम्भ लेख को बाद में फिरोजशाह तुगलक मेरठ से उखाड़ कर दिल्ली ले गया था। दिल्ली के बड़ा हिन्दुराव में स्थापित अशोक का स्तम्भ मेरठ का ही है। अतः अशोक के समय में मेरठ एक महत्वपूर्ण शहरों में से एक रहा होगा इसी कारण स्तम्भ लेख को अशोक ने यहां स्थापित करवाया था।

मेरठ शुंग व कुषाण शासकों के समय में उनके साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। मेरठ में अनेक स्थानों पर शुंग व कुषाण काल के पुरावशेष समय–समय पर प्राप्त होते रहते हैं। गुप्त काल जो भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक उपलब्धियों का काल माना जाता है। गुप्त शासकों के अन्तवेदी नामक विषय के अन्तर्गत मेरठ आता था। छठी शताबि के पूर्वार्ध में मेरठ के आस–पास का क्षेत्र कन्नौज के मौखरी वंश के शासन में चला गया था और उसके उपरान्त हर्षवर्धन ने मेरठ को अपने साम्राज्य की सीमाओं में मिला लिया।

मध्यकालीन इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार 408 हिजरी ने महमूद गजनवी ने मेरठ पर आक्रमण किया और हरदत्त नामक राजा से 25000 दीनार व 50 हाथी वसूल किये। अतः मेरठ प्राचीन काल से मध्यकाल तक अत्यधिक महत्वपूर्ण नगर के रूप में रहा है इसलिए मध्यकाल के आक्रमणकारियों के निशाने पर भी मेरठ रहा। मेरठ एक किले नुमा शहर रहा है, जिसकी चार दीवारी के अन्दर शहर था यह किला मय के काल से मुगलों के काल तक एक महत्वपूर्ण किला माना गया इस किले के 9 गेट थे जो आज भी बुढ़ाना गेट, कम्बोह गेट, लिसाड़ी गेट, खैरनगर गेट, दिल्ली गेट, बागपत गेट, शाहपीर गेट, सोहराब गेट, चमार दरवाजा के नाम से जाने जाते हैं, इन्हीं दरवाजों के भीतर मेरठ शहर बसता था वर्तमान में इसका क्षेत्र कई गुना बढ़ गया है। 1193 ई० से कुतुबद्दीन ऐबक ने मेरठ पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। मेरठ शहर की जामा मस्जिद व ईदगाह सलतनत कला की इमारतें आज भी अपने काल के इतिहास का प्रमाण है।

भारतीय इतिहास में दो शासकों को महान की संज्ञा दी गई है। एक अशोक महान दूसरे अकबर महान दोनों शासकों ने मेरठ शहर का महत्व समझा और मेरठ को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। अकबर ने अपने सिक्कों की टकसाल मेरठ में स्थापित की। अकबर के सिक्कों पर मेरठ टकसाल अंकित किया गया था। मुगल शासकों का लगाव मेरठ से अकबर के बाद भी बना रहा। नूरजहां में यहां शाहपीर की दरगाह पर एक मुगलकालीन इमारत का निर्माण कराया जिसे आज शाहपीर के मकबरे के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित इमारत है। तुजुक–एक–जहांगीरी में शाहपीर का उल्लेख किया गया है। इस इमारत के अतिरिक्त मेरठ में आबू का मकबरा मुगलकालीन एक अन्य खूबसूरत इमारत है।

आधुनिक काल में ब्रिटिश सरकार ने भी मेरठ के महत्व को समझते हुए यहां 1806 ई० में कैन्टोमेंट की स्थापना की। 1819 ई० में मेरठ कैण्ट में सेन्ट जॉन चर्च की स्थापना की गई जो आज भी उत्तरी भारत का सबसे पुराना चर्च है। मेरठ इसी कैण्ट के कारण 1857 ई० के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का प्रथम स्थल बना जब 3rd कैवलटी के 85 सैनिकों द्वारा कारतूस का प्रयोग करने से मना करने के बाद यहां 10 मई 1857 की शाम 6 बजे क्रान्ति प्रारम्भ हो गई व सैनिकों ने ''दिल्ली चलो'' का नारा पहली बार मेरठ में दिया गया, जो बाद में आजाद हिन्द फौज का नारा बना मेरठ के सैनिकों ने दिल्ली के लाल किले पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। तभी से दिल्ली में लाल किले के प्राचीर को आजादी का प्रतीक माना गया और प्रत्येक 15 अगस्त को लाल किले पर स्वतन्त्र भारत के प्रधानमंत्री तिरंगे ध्वज को फहराते है। मेरठ एक ऐसा शहर है जिसने अंग्रेज अधिकारियों को भी भारतीय संस्कृति के रंग में रंग दिया। 1894 में मेरठ के Collector and Magistrate James White ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप मृत्यु के उपरान्त दाहकरण संस्कार द्वारा अपने शरीर का अन्तिम संस्कार करवाया। इसका अभिलेख आज भी मेरठ में अब्दुल्लापुर जेल के बाहर सुरक्षित है। 1886 में निर्मित मेरठ के टाऊन हाल लाइब्रेरी में विवेकानन्द जी ने बैठकर अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया था। दयानन्द सरस्वती, रवीन्द्रनाथ टैगौर, मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, अली बन्धु, जवाहरलाल नेहरू आदि सभी ने मेरठ के ऐतिहासिक महत्व को समझा व यहां की यात्रा की। इसी कारण मेरठ की आजादी के आन्दोलन में मेरठ की एक निर्णायक भूमिका रही है।

अतः मेरठ का भारतीय इतिहास के अनेक काल खण्डों में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मेरठ एक ऐसा शहर है जो प्राचीन काल से वर्तमान समय तक लगातार जीवन के क्रम को जीता रहा है।

सन्दर्भ

1. कृष्ण चन्द शर्मा, मयराष्ट्र मानस, सरस्वती परिषद, 1973.
2. ई०बी० जोशी, उ० प्र० डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, मेरठ, 1965
3. दिनेश कुमार जैन, जैन तीर्थ हस्तिनापुर की गौरव गाथा, दिल्ली, 2005
4. दी जर्नल ऑफ द मेरठ यूनिवर्सिटी एल्युमिनी (मुहा), भाग–1, 2003, एवं दैनिक हिन्दुस्तान, रविवार 20 मई, 2007, तथा शिलालेख, श्री विल्वेश्वर मन्दिर, सदर, मेरठ।
5. फ्यूहररः दी मान्यूमेन्टल एन्टीक्वीटीज एण्ड एन्सक्रिप्शन इन द नार्थ–वेस्टर्न प्रोविन्सेज एण्ड अवध
6. साझी शहादत के कुछ फूल 1857, मेरठ स्थल एवं स्मारक